ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 253-255**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

क्रांति की जननी – मैडम भीकाजी कामा

श्रीमती निर्मला सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास, ठा0 बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

Received-20.03.2025, Revised-25.03.2025 Accepted-30.03.2025 **E-mail : singhnirmala68@gmail.com**

सारांशः ***भारत के स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास अमर और अथाह है, भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने के लिए लाखों भारतीयों ने अपना तन , मन, धन और सर्वस्व जीवन देश पर न्योछावर कर दिया। मुंबई के एक प्रसिद्ध, समृद्ध और शिक्षित परिवार में जन्म लेने वाली मैडम भीकाजी कामा ने सुख–सुविधा और विलासिता पूर्ण जीवन को छोड़कर भारत की आजादी के लिए संघर्ष और कठिनाइयों से भरे हुए जीवन को चुना। उन्होंने पेरिस, लंदन, जिनेवा, नीदरलैंड, अमेरिका जैसे देशों में भ्रमण कर ब्रिटिश सरकार विरोधी प्रचार–प्रसार करके , क्रांतिकारियों की मदद करके और क्रांतिकारी साहित्य प्रकाशित करके, भारत की स्वतंत्रता के लिए उचित माहौल तैयार करने में अपना पूरा जीवन लगा दिया । भारतीय स्वतंत्रता संबंधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण 1902 से 1935 तक लगभग 33 सालों तक अंग्रेज सरकार ने उन्हें भारत में नहीं आने दिया ।1935 में भीकाजी सर कोवासजी जहांगीर के साथ मुंबई पहुंची। भीकाजी शारीरिक रूप से बहुत अशक्त और बीमार थी । भारत आने के 9 महीने पश्चात 13 अगस्त 1936 में 75 वर्ष की आयु में पारसी अस्पताल मुंबई में भीकाजी का निधन हो गया। इस शोध पत्र में मैडम भीकाजी कामा द्वारा भारत को आजाद कराने के लिए किए कार्य, संघर्ष और कठिनाइयां भरे जीवन का अध्ययन किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– स्वाधीनता , संघर्ष , आजादी , वीरांगना , अत्याचार , साहित्य , क्रांतिकारी , विचार, स्वतंत्रता, प्रचार–प्रसार

शोध का उद्देश्य– जर्मनी की विदेशी धरती पर 1907 में पहली बार भारत का झंडा लहराने वाली मैडम भीकाजी कामा का नाम इतिहास के पन्नों में गुम हो गया है, भारत की युवा पीढ़ी की समक्ष 'क्रांति की जननी' के नाम से विख्यात इस वीरांगना के वीरता पूर्ण योगदान को प्रस्तुत करना ही इस शोध पत्र प्रमुख उद्देश्य है। युवा पीढ़ी के लिए इस शोध पत्र का यही संदेश है कि भारत को स्वतंत्रता दिलाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों की प्रति अगाध श्रद्धा और सम्मान रखते हुए , भारत को समृद्ध और मजबूत बनाने की दिशा में अपना सहयोग प्रदान करें।

शोध पत्र की अध्ययन पद्धति– भीकाजी कामा के भारत की आजादी के लिए किए गए कार्य, संघर्ष और कठिनाइयों से भरे जीवन का अध्ययन करने के लिए विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं और पुस्तकों से जानकारियां एकत्रित कर विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना– 'भारतीय क्रांति की जननी' के रूप में ख्याति अर्जित करने वाली मैडम भीकाजी कामा का जन्म 24 सितंबर 1861 को मुंबई की पारसी व्यापारी सोराबजी फ्रॉम जी पटेल और उनकी पत्नी जयजी बाई सोराबजी पटेल के घर में हुआ था। उनके माता–पिता पारसी समुदाय के अमीर शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे। भीकाजी को अपनी मां जयजी बाई से जनसेवा और देशभक्ति के संस्कार विरासत में मिले थे। भीकाजी की शिक्षा मुंबई के अलेक्जेंड्रा नेटिव गर्ल्स इंग्लिश इंस्टीट्यूशन से हुई थी।[1] भीकाजी एक मेहनती और मेधावी छात्रा थी। वह अंग्रेजी, हिंदी मराठी एवं गुजराती चार भाषाओं में पारंगत थी। स्वतंत्र विचारों वाली भीखाजी स्त्री शिक्षा की प्रबल समर्थक थी, अंग्रेज सरकार की अन्याय एवं अत्याचार पूर्ण शासन से नफरत करती थी और भारत को सदैव आजाद कराने के बारे में सोचती रहती थी।

भीकाजी का विवाह अगस्त 1885 में रुस्तम खुर्शीद कामा से हुआ। भीकाजी के पति पेशे से वकील और ब्रिटिश सरकार के सहयोगी और समर्थक थे। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम अधिवेशन में भीकाजी ने भाग लिया। भीकाजी द्वारा सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों में भागीदारी करने के कारण दंपति के बीच गम्भीर मतभेद हो गए। भीकाजी ने अपने साथ दुर्व्यवहार करने वाले ब्रिटिश समर्थक पति को छोड़ दिया। वैवाहिक जीवन नष्ट हो जाने के बाद भीकाजी ने अपना जीवन जनकल्याण और समाज सेवा के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया।[2] सन् 1896 में मुंबई प्रेसिडेंसी में ब्यूबोनिक प्लेग नामक घातक महामारी फैली, जिसमें तेज बुखार एवं ग्रंथियों में सूजन के कारण केवल एक प्रतिशत मरीज ही बच पाते थे,[3] भीकाजी ने अपनी जान की परवाह न करते हुई अन्य महिलाओं के साथ जमशेद जी जी भाई अस्पताल एवं ग्रांट मेडिकल कॉलेज परिसर में महीनों तक रोगियों की सेवा की। 1899 में प्लेग की बीमारी फैलने पर भीकाजी प्लेग संक्रमित मरीजों की सेवा करते–करते स्वयं इस बीमारी से संक्रमित हो गईं। लंबे इलाज के पश्चात भीकाजी की जान बच गई, लेकिन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के कारण चिकित्सीय सलाह पर स्वास्थ्य सुधार के लिए, भीकाजी 1902 में लंदन चली गई और लंबे इलाज के पश्चात के उनके स्वास्थ्य में सुधार हो गया।

स्वास्थ्य में सुधार होने के पश्चात लंदन में उन्होंने अंग्रेजों के कट्टर आलोचक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश समिति के अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी, लाला हरदयाल और श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं से मुलाकात की। भीकाजी दादा भाई नौरोजी के सचिव के रूप में कार्य करने लगी। सन् 1905 लंदन में भीकाजी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडियन होम रूल सोसाइटी' की स्थापना में सहयोग प्रदान किया। इस संगठन से दादा भाई नौरोजी, आर एस राणा, लाला लाजपत राय, बी डी सावरकर और लाला हरदयाल जैसी राष्ट्रवादी नेता जुड़े हुए थे। इस संगठन को लंदन में भारतीय छात्रों व अन्य भारतीयों का अपार समर्थन प्राप्त था। यह संगठन भारत के क्रांतिकारियों के साथ निकट संपर्क बनाए हुए था।[4] भीकाजी ने लंदन के हाइड पार्क में भारत की स्वतंत्रता की वकालत करते हुए एक जोशीला भाषण दिया लंदन में अंग्रेज सरकार ने ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण भीकाजी की भारत वापसी पर प्रतिबंध लगा दिया और इस शर्त पर उनकी भारत वापसी तय की, कि वे लिखित दस्तावेज पर हस्ताक्षर करें, कि भारत लौटकर वे राष्ट्रवादी गतिविधियों में भाग नहीं लेंगी, लेकिन भीकाजी ने यह शर्त मानने से इन्कार कर दिया[5] और विदेश में रहकर ही भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कार्य करने का निश्चय किया।

भीकाजी कामा ने 22 अगस्त 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ट में दूसरे अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भारत को आजाद कराने में मदद करने की अपील की। भारत पर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विनाशकारी प्रभावों के बारे में विस्तार से बताया – ब्रिटिश सरकार के आर्थिक शोषण , करो की मार ,अकालों और प्लेग से हुई तबाही पर सम्मेलन में प्रकाश डाला गया। जब जैक यूनियन (यूनाइटेड किंगडम का राष्ट्रीय ध्वज) झंडे को भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में फहराया जाने लगा, तो मैडम कामा ने

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

इसका विरोध किया[6] और कहा यह झंडा भारतीय स्वतंत्रता का है! देखो, इसका जन्म हो चुका है! इसे उन युवा भारतीयों के खून से पवित्र बनाया गया है, जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया है। मैं आपसे आह्वान करती हूँ कि आप उठें और भारतीय स्वतंत्रता के झंडे को सलाम करें। मैं दुनिया भर के स्वतंत्रता प्रेमियों से इस झंडे का समर्थन करने की अपील करती हूँ।[7]

भीकाजी द्वारा जर्मनी की धरती पर फहराया गया झंडा श्याम जी कृष्ण वर्मा और विनायक दामोदर सावरकर के सहयोग से बनाया था, जिसमें केसरिया हरे और लाल रंग की तीन पट्टियां थी, हरे रंग में आठ कमल, लाल रंग में चांद और सूरज तथा केसरिया रंग में वंदे मातरम लिखा हुआ था। यह झंडा भारत की हिंदू–मुस्लिम एकता का प्रतीक था।[8] भीकाजी का यह साहसिक प्रदर्शन ब्रिटिश सरकार से लिए एक खुली चुनौती था उनके क्रांतिकारी कार्यों के कारण ब्रिटिश सरकार की नींद उड़ गई थी। ब्रिटिश सरकार भीकाजी के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करना चाहती थी।

स्टटगार्ट के सम्मेलन के पश्चात, कामा ने भारतीय राष्ट्रवादी स्वाधीनता आंदोलन के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अमेरिका की यात्रा की। संयुक्त राज्य अमेरिका न्यूयॉर्क में उन्होंने मिनर्वा क्लब के सदस्यों को संबोधित किया।[9] भीकाजी मई 1909 में पेरिस आ गई। जहां उन्होंने मंचुरशाह बुर्जोरजी गोदरेज एवं एस आर राणा के सहयोग से 'पेरिस इंडियन सोसाइटी' की स्थापना की।[10] यह संगठन इंग्लैंड से भाग रहे भारतीय क्रांतिकारियों के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल था। यहां भारतीय क्रांतिकारियों की हर तरह की सहायता प्रदान की जाती थी। निर्वासन में रहते हुए भीकाजी ने विदेश में निवास कर रहे भारतीयों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने का कार्य करती। पेरिस में भीकाजी का घर क्रांतिकारी साहित्य के प्रकाशन और प्रचार का मुख्य केंद्र बन गया था। जुलाई 1909 में इंडियन नेशनल एसोसिएशन के वार्षिक उत्सव में मदन लाल ढींगरा ने विलियम हट कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी। अंग्रेज सरकार ने मदन लाल ढींगरा को लंदन में फांसी दे दी और अन्य भारतीय राष्ट्रवादियों पर भी कठोर कार्यवाही की। ब्रिटिश सरकार ने भारत में राष्ट्रवादी कविता 'वंदे मातरम' और भीकाजी कामा के द्वारा प्रकाशित साहित्य को प्रतिबंधित कर दिया। तब उन्होंने जेनेवा से सितंबर 1909 में वंदे मातरम् नामक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित की।[11] शहीद मदनलाल ढींगरा की याद में वर्लिन से 'मदन की तलवार' नामक क्रांतिकारी साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया, जब बी ड़ी सावरकर की पुस्तक फर्स्ट वॉर ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस को अंग्रेज सरकार ने गैर कानूनी घोषित कर दिया, तो मैडम भीखाजी कामा ने मराठी भाषा में लिखित इस ग्रंथ का फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया और 1909 में इसे नीदरलैंड में प्रकाशित कराया।[12] समस्त क्रांतिकारी साहित्य को यूरोप अमेरिका अफ्रीका और एशिया के देशों में वितरित किया जाता था और फ्रांस के भारतीय उपनिवेश पांडिचेरी के माध्यम से भारत में तस्करी करके भेजा जाता था और भारतीयों को वितरित किया जाता था।[13] अंग्रेज पांडिचेरी में ब्रिटिश विरोधी भारतीय क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करने और मैडम कामा के प्रकाशित साहित्य को जप्त करने के लिए फ्रांसीसियों पर दबाव बना रहे थे, लेकिन फ्रांसीसियों ने ऐसा करने से इंकार कर दिया।[14] 1910 में ब्रिटिश सरकार ने फ्रांस से भीखाजी के प्रत्यर्पण की मांग की, लेकिन फ्रांस ने इसे भी अस्वीकार कर दिया।[15] भारत में अंग्रेजों ने भीखाजी की सारी संपत्ति भी जब्त कर ली।

भीखाजी भारत को आजादी के लिए कार्य कर रहे राष्ट्रवादी नेताओं और क्रांतिकारियों को सहयोग प्रदान करती थी। नासिक में अनंत लक्ष्मण कान्हेरे ने 21 दिसंबर 1909 को अंग्रेज अधिकारी जैक्सन को गोली मार दी, ब्रिटिश सरकार ने बी डी सावरकर पर आरोप लगाया कि इस हत्या की साजिश उन्होंने रची, बल्कि पिस्तौल भी उपलब्ध करवाई। फ्रांस के मार्शिले शहर से ब्रिटिश सैनिकों ने सावरकर को अवैध रुप से गिरफ्तार किया, इस अवैध गिरफ़्तारी की सूचना मैडम कामा द्वारा खूब प्रसारित की. इससे ब्रिटिश सरकार की किरकिरी हुई। मैडम कामा ने वीर सावरकर को बचाने के लिए पेरिस में ब्रिटिश दूतावास में लिखकर दिया, कि पिस्तौल भारत भेजने में सावरकर का कोई हाथ नहीं है ,बल्कि वह पिस्तौल उन्होंने भारत भेजी थी, बावजूद इसके सावरकर को अंग्रेज शासन ने काला पानी की सजा सुना दी।[16]

सन 1914 में प्रथम विश्व युद्ध सम्मिलित रूप से जर्मनी और जापान से युद्ध कर रहे थे, इसलिए फ्रांस ने सभी भारतीय क्रांतिकारियों की गतिविधियों को प्रतिबंधित दिया, जिससे अनेक क्रांतिकारी पेरिस छोड़कर चले गए लेकिन भीकाजी कामा पेरिस में ही रही। अक्टूबर 1914 में फ्रांस के मार्सिले शहर में उन्होंने ब्रिटिश सेना के पंजाब रेजीमेंट के सैनिकों को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भड़काने की कोशिश की, तो फ्रांसीसी सरकार ने उन्हें बंदी बना लिया। उन्हें फ्रांसीसी शहर बिची में नजरबंद कर दिया गया[17] और नवंबर 1917 में इस शर्त पर रिहा किया, कि वह हर हफ्ते पुलिस में रिपोर्ट करती रहेगी। प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो जाने के बाद, भीकाजी पेरिस लौट आई और उन्होंने अपनी राजनीतिक और क्रांतिकारी गतिविधियों को पुनः प्रारंभ किया।[18]

भीकाजी के भारत आने पर ब्रिटिश सरकार ने रोक लगा दी थी और उनकी संपत्ति को भी जप्त कर लिया था इसलिए पेरिस में उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। धन के लिए वे अपने भाई अर्देशिर पटेल पर निर्भर रहती थी और भाई की मृत्यु के पश्चात वे गरीबी में डूब गई। 1934 में एक दुर्घटना में उनके सिर में गम्भीर चोट आई, जिसके कारण उनका चेहरा लकवा ग्रस्त हो गया।[19]

भीकाजी जी ने कोवासजी जहांगीर के माध्यम से ब्रिटिश सरकार से भारत आने की अनुमति मांगी। राष्ट्रवादी गतिविधियों को त्यागने की शर्त पर ब्रिटिश सरकार ने भीखाजी को भारत आने की अनुमति प्रदान की। नवंबर 1935 में भीकाजी सर कोवासजी जहांगीर के साथ मुंबई पहुंची। भीकाजी शारीरिक रूप से बहुत असक्त और बीमार थी। भारत आने के 9 महीने पश्चात 13 अगस्त 1936 में 75 वर्ष की आयु में पारसी अस्पताल मुंबई में भीकाजी का निधन हो गया। ब्रिटिश सरकार की अन्यायपूर्ण, अत्याचारी एवं साम्राज्यवादी नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने वाली एवं विदेशी धरती पर भारत का प्रथम झंडा लहराने वाली भीकाजी कामा चिर निद्रा में सो गई।

तैंतीस साल से ज़्यादा समय तक भीकाजी कामा ने यूरोप और अमरीका में भाषणों और क्रांतिकारी लेखों से अपने देश की आजादी के हक की मांग बुलंद की। उन्हें 'भारतीय क्रांति की जननी' के रूप में जाना जाता है। अंग्रेजों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होंने अपने देश को स्वतंत्र कराने के प्रयास जारी रखे। बीकाजी कामा ने अपनी निजी संपत्ति अनाथ लड़कियों की पालन पोषण के हेतु अवबाई पेटिट अनाथालय को दान कर दी, जो अब अवबाई फ्रॉमजी पेटिट गर्ल्स हाई स्कूल के नाम से जाना जाता है और उन्होंने 54000 रुपए अपने परिवार की अग्नि मंदिर को दान कर दिए। निसंदेह भीकाजी कामा एक बहादुर देशभक्त और दयालु महिला थी उन्होंने वैभवपूर्ण जीवन का परित्याग कर कांटों की राह चुनी। मैडम भीकाजी कामा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रति साहस और समर्पण का एक स्थायी प्रतीक बनी हुई हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दारूखानवाला , होर्मुसजी धुन्जिशां (1963) धरती पर पारसी चमक ,खंड 2 बंबई जी क्लैरिज।
2. साहू, स्काईलैब (2023) भारत में नारीवाद का विस्तार–महिलाएं शक्ति और राजनीतिक, पेज–181 आईएसबीएन 978–1–000–84972–1.
3. नेशनलआर्मी म्यूजियम, nam-ac-vk_eÛplore_Bombay .
4. ओवेन, ऐन (2007) द ब्रिटिश लेफ्ट इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आई.एस.डी.एन. 0–19–923301–2.
5. नारंग, गौरवी (2022) भीकाजी कामा पारसी क्रांतिकारी–विदेश में पहला भारतीय झंडा फहराया, द प्रिंट. इन 13 अगस्त 2022.
6. डाबर, प्रवीण (2022) भीकाजी कामा– भारत में झंडा फहराने वाली पहली महिला, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस Inc-पद 6.9.2022.
7. राय सुमित (2024) कौन थी भीकाजी कामा जिन्होंने विदेशी धरती पर लहराया भारत का.zee news-India-com August 2024.
8. चौहान, ऋषभ (2024) मैडम कामा विदेश में तिरंगा फहराने वाली पहली महिला कैसे बनी, इंडिया टुडे एजुकेशनल डैस्क नई दिल्ली, 24 सितंबर 2024.
9. ईडूलजी, आर के (2016) दा इंस्पायरिंग स्टोरी ऑफ़ बीकाजी कामा पृष्ठ–3 बेस्ट वैंकयूवर कनाडा।
10. कुमार अमन (2022) 115 साल पहले विदेश में फहराया भारत का झंडा आजतक डॉट इन 24 सितंबर 2022.
11. फोर्ब्स गेराल्डिन (1999) आधुनिक भारत की महिलाएं, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ–100 आईएसबीएन 0–521–65377–0.
12. शर्मा ,विकास (2022) कैसा था वह झंडा, जो भीकाजी कमाने फहराया था। हिंदी न्यूज़ 18 डॉट कॉम 24 सितंबर 2022.
13. गुप्ता की आर और अमित 2006 भारत का संक्षिप्त विश्वकोश अटलांटिक प्रकाशक आईएसबीएन 978–81–269–0639–0
14. ईडूलजी ,आर के (2016) दा इंस्पायरिंग स्टोरी ऑफ़ बीकाजी कामा पृष्ठ –5 वैस्ट वैंकयूवर कनाडा।
15. बोस पूर्णिमा (2008) कामा मैडम भीकाजी, ऑक्सफोर्ड एनसाइक्लोपीडिया वूमेन इन वर्ल्ड हिस्ट्री, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. चौहान, ऋषभ (2024) मैडम कामा विदेश में तिरंगा फहराने वाली पहली महिला कैसे बनी, इंडिया टुडे एजुकेशनल डैस्क नई दिल्ली, 24 सितंबर 2024
17. ईडूलजी, आर के (2016) दा इंस्पायरिंग स्टोरी ऑफ़ बीकाजी कामा पृष्ठ–6, वैस्ट वैंकयूवर कनाडा।
18. पाठक दिनेश 2023 वह महिला क्रांतिकारी जिसने विदेश में झंडा फहराया, टीवी नाइन हिंदी डॉट काम 24 सितंबर 2023
19. ममता की सिद्धांत 2020 बीकाजी रुस्तम काम और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ध्वज की कहानी इंडिया टीवी न्यूज़ डॉटकाम, अगस्त 2020 नई दिल्ली।
20. फोर्ब्स गेराल्डिन (1999) आधुनिक भारत की महिलाएं, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ –100 आईएसबीएन 0–521–65377–0.
21. ईडूलजी ,आर के (2016) दा इंस्पायरिंग स्टोरी ऑफ़ बीकाजी कामा पृष्ठ–7, वैस्ट वैंकयूवर कनाडा।

*****